IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, June 2025
Impact Factor: 7.67

समसामयिक परिवेश में संत साहित्य की भूमिका

डॉ.पूनम श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (हिंदी)
स. ब. पी. जी. कॉलेज बदलापुर, जौनपुर|

भूमिका-

वर्तमान समय में व्यवहारगत गिरावट महसूस की जा रही है, इस गिरावट से बचने ,उदात्त व्यक्तित्व का निर्माण करने में संत साहित्य वरदान सिद्ध होगा। संतों का व्यवहार लोक कल्याणकारी होता है। उनके जीवन से हमें एक सच्ची और अच्छी सीख मिलती है ।

संत तुलसीदासजी कहते हैं- संतों के हृदय में काम ,क्रोध, लोभ, मोह रूपी मनोविकार नहीं होता। उनका जीवन जप, तप ,व्रत और संयम से संयमित होता है। श्रद्धा, मैत्री ,प्रसन्नता ,दया आदि श्रेष्ठ गुण उनके हृदय में वास करते हैं। "संत हृदय नवनीत समाना" कहकर तुलसीदासजी ने संतों के हृदय की विशिष्टता का निरूपण किया है। आज का मानव अपने कर्तव्यों को तेजी से भूल रहा है। यही कारण है कि उसकी संवेदना सूखती जा रही है। सूखती हुई संवेदनाओं को सींचने के लिए हमें संतों का आचरण व्यवहार में लाने की आवश्यकता है, ताकि हम व्यवहारगत दृष्टि में सुधार ला सकें। ईर्ष्या आदि से मुक्ति पा सकें विशुद्ध हृदय से जीवन का आनन्द महसूस कर सकें इसके लिए हमें भगीरथ प्रयत्न करना होगा। संतों का जीवन उनका साहित्य हमें अपने अध्ययन, अध्यापन, व्याख्यान ,व्यवहार दैनिक चर्चा सभी में शामिल करना होगा। ऐसा करने से हम द्वंद्व संशय से बच सकेंगें । संत सत्य की खोज करने वाले तत्व वेत्ता होते हैं। उनकी चर्चा करने से,उनके जीवन चरित पढने से व्यक्तित्व में उदात्तता आना स्वाभाविक है ।संत कवियों को पढने से पता चलता है कि प्रेम, संगीत, विनय, आनन्द से इनका साहित्यसिक्त है। शुद्ध हृदय और जीवन अनुभूति सौंदर्य और प्रेम तथा सत्य को अभिव्यक्ति देकर समाज को गौरवान्वित करने का श्रेय संतों को ही है।

डा. बड़थ्वालजी के अनुसार "इनकी काव्य रचना सम्बन्धी सफलता के रूपात्मक प्रेम , संगीत, विनय तथा आनन्दोद्रेक में देखी जाती है क्योंकि उन्हीं में उनकी आंतरिक अनुभूति का पता चलता है। सौंदर्य , प्रेम एवं सत्य की त्रयी की अभिव्यक्ति भी इन्हीं रचनाओं में मिलती है।" [1]

चतुर्दिक रूप से संतों का जीवन उनका सृजन मानव की चेतना का संवाहक उदात्त व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

"संत कवियों का सारा कर्म ही आडंबरहीन और सहज है।"[2]

संतों के भाव विचार शुद्ध होते हैं यही कारण है कि इनके काव्य में वैचारिक साम्य का अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है। संत नामदेव और कबीर से लेकर आजतक विशुद्धमना संतों में हृदयग्राही समता देखी जा सकती है।

"इसमें दक्षिण के महाराष्ट्रीय संत नामदेव से लेकर उत्तर के पंजाबी गुरू नामदेव भी हैं। इसी प्रकार पश्चिमी काठियावाड़ के प्राणनाथ से लेकर पूर्व के बिहार प्रांत वाले दरियासाहब को भी स्थान मिला है।" [3]

विशेष आख्या-

संत शब्द का अर्थ , संत साहित्य की संक्षिप्त चर्चा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, June 2025 Impact Factor: 7.67

संत शब्द का अर्थ-

संत सत पथ का अनुगमन करने वाला तत्ववेत्ता, सत्यशोधी, विशुद्धहृदयी संत कहलाते हैं। त्यागी , तपी , दानी संत कहलाते हैं । संत शब्द का प्रयोग प्राचीन वैदिक काल से हो रहा है। संत को परमात्मा और ब्रह्म के पर्याय के रूप में जाना जाता रहा है।

तुलसीदासजी कहते हैं-
"बंदउं संत समान चित , हित अनहित नहिं काय।।"

इतना ही नहीं दादूदयालजी कहते हैं-
"पर उपगारी संत जन , साहबजी तेरे।।
जाती देखी आत्मा राम कहि टेरे।।"

संत जैतरामजी संत को संत जैसा ही मानते हैं-
"संत सरीखे संत और न दूजा कोइ।।"

मूलत: संत उस महान आत्मा को कहते हैं जो
निष्काम और परोपकारी होते हैं।

संत साहित्य –

संत साहित्य समाज के लिए अमिय तुल्य होता है। संत साहित्य का उदय ऐसे समय में हुआ जब मानवता कराह रही थी , जब व्यक्ति का व्यक्तित्व क्षुद्र हुआ जा रहा था । शोषण , संहार तीव्रता से विस्तार पा रहे थे। ऐसे उथल- पुथल भरे समय में आध्यात्मिक चिन्तन करके हमारे उदारमना, सुधीचिंतक सत्य के अन्वेषक संतों ने धार्मिक वातावरण सदाचरण से आत्मबल प्रदान करने की महती चेष्टा की ।

जैसा कि शुद्ध भाव - विचार , देशकाल की परम्परा से परे होते हैं। शैलीगत अंतर के बाद भी सत्य की अभिव्यक्ति सभी एक जैसी ही प्रभावशाली थी।

ये सभी विस्तृत मानसिकता के धनी थे। जातिगत , समाजगत संस्कार इनके मार्ग में बाधा न बन सके। इन सभी का लक्ष्य है- मानवता का सृजन, मानवीय गुणों का निर्वहन । इन सभी की आत्मिक भावना की एकता का परिणाम समाज के लिए हितकारी हुआ ।

"इसमें जहां एक ओर सुरतगोपाल [कबीर के शिष्य] और सुंदरदास जैसे ब्राह्मण थे वहीं रविदास जैसे शूद्र भी थे ; पीपा जैसे राजपूत राजा थे तो संतलाल जैसे जंगली दीनहीन महात्मा थे । नानक जैसे खत्री थे तो कबीर जैसे जुलाहा भी थे। यारीसाहब जैसे शाहजादा थे तो धर्मदास जैसे वणिक भी थे, भीखासाहब जैसे किसानकुर्मी भी थे । संतलाल सहजोबाई और बावरीसाहिबा जैसी संत कवयित्रियों ने भी इस परम्परा को पुष्ट किया है तात्पर्य यह है कि आलोच्य परम्परा उत्तर भारत की एक ऐसी सार्वभौम और सशक्त काव्य परम्परा रही है ,जो देशकाल और जाति की सीमाओं से परे है। " [4]

इनके अभिमत में आह्लादकारी एकमतता देखने को मिलती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, June 2025 Impact Factor: 7.67

"जहां तक उनके एकेश्वरवाद, अहिंसावाद, अवतारवाद, साधनापाखंड , और रूढिवादिता आदि के विरोध का प्रश्न है उसमें सभी संत कवि एकमत हैं।" [5]

यही मतैक्य सद्विचार मानवता को पुष्पित पल्लवित करते रहे हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी भी कहते हैं-

"प्रेमस्वरूप ईश्वर को सामने लाकर भक्त कवियों ने हिन्दुओं और मुसलमान दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।" [6]

संत सत पथ प्रदर्शक होते हैं। "संतों भाई आई ग्यान की आंधी" कहकर यह सिद्ध करते हैं कि हर सच्चा अच्छा इंसान एक दूसरे के प्रति वैसा ही अनुराग रखता है जैसा एक भाई दूसरे भाई के प्रति रखता है।

उद्देश्य-

आज का युवा निरन्तर अपनी दिनचर्या को बेतरतीब करता जा रहा है।उसका दैनिक क्रियाकलाप असंयमित है और यह मानवीय मूल्यों के लिए बेहद खतरनाक है । संत साहित्य से संस्कार पुष्ट होंगे, इतना ही नहीं आज के इस विघटनकारी वातावरण में संतसाहित्य की उपादेयता स्वयंसिद्ध है।

सारांश-

पूरा संतसाहित्य मानवता के चरम उत्थान में सहायक है । इस पश्चिमीकरण के धुंध में संतसाहित्य ही उजास दे सकता है।

निष्कर्ष-

संतसाहित्य आज के समाज के लिए अमियतुल्य है इसलिए इसका अध्ययन विस्तार अधिक से अधिक होना आवश्यक है ताकि भावी पीढ़ी वर्तमानयुगीन पतन से बच सके ।

संदर्भग्रंथ सूची –

1. **डा. पीतांबरदत्त बड़थ्वाल-हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय , पृष्ठ 3 4 8**
2. **त्रिभुवनसिंह- साहित्यिक निबन्ध , पृष्ठ 96**
3. **पं. परशुराम चतुर्वेदी- भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखायें ,पृष्ठ 50**
4. **त्रिभुवनसिंह- साहित्यिक निबन्ध , पृष्ठ 87**
5. **डा. श्यामसुन्दर – हिंदी काव्य की निर्गुण काव्यधारा में भक्ति , पृष्ठ 18**
6. **आ. रामचन्द्र शुक्ल –हिंदी साहित्य का इतिहास , पृष्ठ 76**